एक दिन न एक दिन मैं भी मिट जाऊंगा

तेज नारायण राय

एक दिन एक दिन में भी मिट जाऊंगा।

जिस तरह बरसात की
उमड़ती बाढ़ में

मेहनत पसीने से उठाई गई
वह गांव में
गांव का
गरीबों की मिट्टी की दीवार
थोड़ी-सी कहीं छिप बच रह न पाई ,खड़ी

लाख कोशिशों के बावजूद भी
वह मिट्टी की दीवार जमीन पर भर भराकर गिर हो गई धराशाही

मेरे वह पुरखों की तरह
मिट्टी से बनी बनाई मिट्टी की दीवार
फिर से
मिट्टी में मिलकर बन गई, मिट्टी

ठीक उसी तरह
निश्चित है कि मैं भी एक दिन न एक दिन
बढ़ती उम्र की बाढ़ में बह मिट जाऊंगा
कहीं कुछ भी जा छिप थोड़ा सा भी बच रह न पाऊंगा
इस धरती में नामोनिशान के लिए

क्रोध से जीवन का ज्योत न जलता है

चल अब दमन छोड़, थाम ले मित्रता का दामन।
क्रोध से मन जलता, जीवन का ज्योत न जलता है।

तकरारें दिल में नफरतें हैं जगाती,शोले भड़काती हैं।
बीच खड़ी दीवारें मिलती,दिल से दिल न मिलता है।

रगों का खून खोलता, ह वा चलती तूफां उठाता है।
घर उजड़ता, बेचैनी बढ़ती, सुकून न मिलता है।

नफरतें कायम रखती हैं सदैव, जंग का सिलसिला।
अंजाम कुछ भी हो, जहर की जगह दूध न मिलता है।

भाई कांटे सा चुभन दिल में दर्द ही दर्द मिलता है।
पथ पर कांटे की जगह बिछा फूल न मिलता है।

अरमानों का तारा टूटा शीशा सा बिखरा मिलता है।
हाथ आया मित्रता का मौका फिर दोबारा न मिलता है।

तेज नारायण राय